अलीगढ़ प्रदर्शनी का स्वर्णिम इतिहास

अलीगढ़ की यह ऐतिहासिक औद्योगिक एवं कृषि प्रदर्शनी अपने पुंसवन की अवस्था में **अलीगढ़ डिस्ट्रिक्ट फेयर** के नाम से जानी जाती थी। सन् 1880 के दशक में अपने शैशव काल में यह प्रदर्शनी तत्कालीन राजे–महाराजों, नवाब, ज़मीदारों के शौक के कारण उम्दा नस्ल के घोड़ों के प्रदर्शन तथा उनके खरीद फरोख्त का माध्यम बन गयी थी। प्रदर्शनी परिसर का दरबार हॉल आज भी उस इतिहास को अपने आंचल में समेटे उसी भव्यता को हमारे समक्ष प्रतिवर्ष प्रदर्शनी अवधि में प्रस्तुत करता है। अँग्रेज कलेक्टर कभी इसी दरबार हॉल में अपना दरबार लगाकर जनता की समस्यायें सुना करते थे तथा नवाब एवं रईस लोग इस दरबार हॉल की शोभा हुआ करते थे। बदलते दौर में यहाँ मनोरंजन के लिये महफिले सजने लगी तथा खेल–तमाशें वाले आने लगे तथा लोगों के आकर्षण के केन्द्र होने के कारण व्यापारी एवं दुकानदार भी इसका हिस्सा बनने लगे। गुजरते वक्त के साथ इस दरबार हॉल के वैभव ने भी विस्तार पाया तथा स्थानीय शिल्पियों, मिट्टी तथा लकड़ी के बर्तन बनाने वालों तथा कृषि पर आश्रित जनता के लिये वर्षभर उपयोगी सामान का क्रय करने का एक माध्यम भी बन गया। दरबार हॉल की इस संस्कृति ने एक मेले का स्वरूप ग्रहण कर लिया, जिसमें पेशावर से आने वाले पठान दुकानदारों ने मेवों से भरपूर हलवा पराठे का परिचय कराकर उसे आज भी लोगों की जुबान में जिन्दा रखा है तथा यह व्यंजन आज भी प्रदर्शनी की खास पहचान बना हुआ है।

देश की आजादी के बाद सर्वप्रथम तत्कालीन ज़िलाधिकारी श्री गोविन्द नरायण ने इस प्रदर्शनी को एक जनमेला बनाने का प्रयास किया, जिसके परिणास्वरूप देशभर के हस्त शिल्पियों एवं दुकानदारों को इस प्रदर्शनी ने अपनी ओर आकर्षित करना प्रारम्भ कर दिया। प्रदर्शनी परिसर में स्थापित मित्तल द्वार तत्कालीन ज़िलाधिकारी श्री के0सी0 मित्तल की स्मृति को आज भी हमारे मन में जिन्दा रखे हुये है। श्री के0सी0 मित्तल के सद्प्रयासों ने इस प्रदर्शनी के आयोजन को एक सांगठनिक स्वरूप प्रदान किया। उनके द्वारा ही सर्वप्रथम एक कमेटी का गठन किया गया था। यही वो समय था जब जनपद के विकास के कार्यों को इस प्रदर्शनी के माध्यम से जनमानस तक पहुँचाने की योजना क्रियान्वयित हुई। वर्ष 1961 में तत्कालीन ज़िलाधिकारी श्री दिलीप कुमार भट्टाचार्य द्वारा इस प्रदर्शनी को औद्योगिक एवं कृषि प्रदर्शनी का स्वरूप प्रदान किया गया। वर्ष 1972 में तत्कालीन कलेक्टर श्री सोमनाथ पण्डिता ने प्रदर्शनी में उच्चकोटि के सांस्कृतिक कार्यक्रमों को जोड़कर इसे एक नया आयाम प्रदान किया।

अलीगढ़ की यह औद्योगिक एवं कृषि प्रदर्शनी साम्प्रदायिक सौहार्द का एक अद्भुत नमूना है। इसे साम्प्रदायिक सौहार्द का वाहक यूं ही नहीं माना जाता। वर्ष 1978 में जब अलीगढ़ साम्प्रदायिक दंगो की आग में जल रहा था तो इस प्रदर्शनी के आयोजन में भी ग्रहण लग गया था, किन्तु वर्ष 1983 में तत्कालीन ज़िलाधिकारी श्री पी0एल0 पुनिया द्वारा अलीगढ़ की विवेकशील एवं जागृत जनता का सहयोग लेकर पुनः इसे इसके वैभवशाली रूप में आयोजित कराया गया तथा इस प्रदर्शनी ने यह साबित किया कि यह सही मायने में अलीगढ़ के सामान्य जनमानस की साम्प्रदायिक सौहार्द की भावना का प्रतीक है। इस समय तक इस प्रदर्शनी ने अपने आयोजन के 100 वर्ष पूर्ण कर लिये थे, जिसको प्रदर्शित करने के लिये भव्य शताब्दी द्वार का निर्माण कराया गया था। वर्ष 1987–88 में इस प्रदर्शनी के प्रभारी अधिकारी श्री हरदेव सिंह ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के प्रस्तुतिकरण हेतु एक भव्य नाट्यशाला का भी निर्माण कराया, जो आज भी कृष्णांजलि नाट्यशाला के रूप में इस प्रदर्शनी का आकर्षण बनी हुई है।

औद्योगिक एवं कृषि प्रदर्शनी ने अपने 125 वर्षों से भी अधिक के इतिहास में अनेक उतार–चढ़ाव देखे हैं, किन्तु इसने निरन्तर नये आयाम जोड़े हैं। प्रदर्शनी परिसर में एक भव्य अतिथिगृह के साथ–साथ शिल्पग्राम, मुक्ताकाशीय मंच तथा अनेक पक्की दुकानों का निर्माण हुआ है तथा इसने और अधिक व्यवस्थित भव्य रूप ग्रहण किया है।

वस्तुतः अलीगढ़ की यह औद्योगिक एवं कृषि प्रदर्शनी अपने वर्तमान स्वरूप में पूरे देश में विख्यात हो चुकी है तथा इसके वार्षिक आयोजन के लिये आम जन पूरी उत्कंठा से इंतजार करते हैं। इस प्रदर्शनी की विविधता के कारण न केवल मनोरंजन के क्षेत्र से जुड़े हुये फिल्मी कलाकार, पार्श्व गायक, लोक कलाकार इसमें शिरकत करना अपने लिये सौभाग्य की बात समझते हैं, वरन् देश के विभिन्न प्रान्तों के लोक कलाकार, हस्तशिल्पी भी वर्षभर इसके आयोजन का व्यग्रता से इंतजार करते हैं। यह हर्ष की बात है कि अपने आधुनिक स्वरूप में भी इस प्रदर्शनी ने ग्रामीण जनता विशेषकर किसान एवं मजदूर के आकर्षण को बनाये रखा है। समाज का यह सबसे महत्वपूर्ण वर्ग अभी भी अपनी वर्षभर की जरूरतों को पूरा करने के लिये खरीददारी करने तथा सस्ता एवं स्वस्थ मनोरंजन प्राप्त करने के लिये नुमाइश अवधि में बड़ी संख्या में यहाँ आता है। इस प्रदर्शनी के माध्यम से जनपद की शिक्षा, कला, संस्कृति एवं खेलकूद की नयी–नयी प्रतिभाओं को अपनी प्रतिभा प्रदर्शन का अवसर प्राप्त होता है। प्रतिवर्ष इस प्रदर्शनी में काई न कोई नया आयाम जुड़ता है।

प्रदर्शनी की सामान्य सभा में लगभग 800 सदस्य हैं जो इस बात का द्योतक है कि यह राजकीय औद्योगिक एवं कृषि प्रदर्शनी सामान्य जन की सहभागिता से ही अपने इस वैभवशाली एवं गौरवपूर्ण रूप में हमारे सामने है तथा इस प्रदर्शनी को प्राण वायु अलीगढ़ की विवेकशील जनता से प्राप्त होती है। अतः कोई कारण नहीं कि यह आने वाले समय में न केवल अलीगढ़ के लिये वरन् सम्पूर्ण देश के लिये साम्प्रदायिक सौहार्द एवं लोक मानस की अभिव्यक्ति का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेगी।

****